स्वर्ग के राज्य में कौन महान है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

स्वर्ग के राज्य की समझ के लिए यह जानना बहुत आवश्यक है कि अधिकार और धन में स्पष्ट अंतर होता है — यह अंतर इस संसार में भी है और परमेश्वर के राज्य में भी। जो इस फर्क को समझता है, वह जान सकता है कि परमेश्वर की दृष्टि में सच्ची महानता क्या है।

धरती पर अधिकार बनाम धन

धरती पर बहुत से लोग अमीर हो सकते हैं या अधिकारशाली, या फिर दोनों। लेकिन अधिकार इस बात पर निर्भर नहीं करता कि आपके पास कितना धन है। एक अमीर व्यक्ति, किसी मंत्री, मेयर या राज्यपाल के आदेश को सिर्फ अपनी दौलत से बदल नहीं सकता। धरती पर अधिकार पद से आता है, न कि संपत्ति से।

इसी तरह, स्वर्ग के राज्य में भी महानता और आत्मिक धन दो अलग-अलग बातें हैं। एक व्यक्ति आत्मिक रूप से बहुत धनी हो सकता है, लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में महान नहीं — और इसके विपरीत भी।

स्वर्ग के राज्य में आत्मिक धन

जैसे धरती का धन परिश्रम और बुद्धिमत्ता से प्राप्त होता है (नीतिवचन 10:4), वैसे ही स्वर्ग का धन विश्वास, सेवा और भक्ति से प्राप्त होता है।

स्वर्ग के राज्य में कौन महान है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

यीशु ने कहा:

“अपनी संपत्ति बेचकर दान दो। अपने लिए ऐसे बटुए बनाओ जो पुराने न हों, ऐसा धन जमा करो जो स्वर्ग में कभी नष्ट न हो — जहाँ कोई चोर नहीं पहुँच सकता और कोई कीड़ा उसे नष्ट नहीं कर सकता।”
— लूका 12:33 (ERV-HI)

यह “स्वर्ग का धन” उस आत्मिक धन का प्रतीक है जो एक विश्वासयोग्य जीवन से संचित होता है — जैसे कि सुसमाचार सुनाना, ज़रूरतमंदों की सेवा करना, उदारता, और प्रेम से भरे कार्य।

पौलुस लिखता है:

“फिर वे कैसे पुकारें उस पर जिसे उन्होंने विश्वास नहीं किया? और कैसे विश्वास करें उस पर जिसे उन्होंने सुना नहीं? और कैसे सुनें जब कोई प्रचारक न हो?”
— रोमियों 10:14 (ERV-HI)

स्वर्ग के राज्य में कौन महान है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

प्रत्येक आत्मिक कार्य हमारे लिए स्वर्ग में खज़ाना बनता है (मत्ती 6:19–21)। एक उदाहरण है उस विधवा का जिसने सब कुछ दे दिया:

“यीशु मंदिर के दानपात्र के सामने बैठ गए और लोगों को देख
रहे थे कि वे उसमें पैसे कैसे डालते हैं। बहुत से अमीर लोगों
ने बहुत कुछ डाला। फिर एक गरीब विधवा आई और उसमें दो छोटी तांबे की सिक्के डाले — जो बहुत कम थे। यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर कहा, ‘मैं तुमसे सच कहता हूँ, इस गरीब विधवा ने उन सब लोगों से ज़्यादा डाला है जिन्होंने दानपात्र में कुछ डाला, क्योंकि उन्होंने अपनी बहुतायत में से दिया है, परंतु इसने अपनी गरीबी में से सब कुछ दे दिया — जो उसके पास था, अपनी पूरी जीविका।’”
— मरकुस 12:41–44 (ERV-HI)

इससे यह सिद्ध होता है कि आत्मिक धन किसी की मात्रा से नहीं, बल्कि दिल की स्थिति और परमेश्वर पर भरोसे से मापा जाता है:

“हर व्यक्ति जैसा मन में निश्चय करे वैसा ही दे, न तो खेदपूर्वक और न ज़बरदस्ती से, क्योंकि परमेश्वर आनंद से देने वाले से प्रेम करता है।”

स्वर्ग के राज्य में कौन महान है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

— 2 कुरिन्थियों 9:7 (ERV-HI)

स्वर्ग के राज्य में सच्ची महानता

जब चेलों ने यीशु से पूछा, “स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा कौन है?” — उन्होंने उत्तर में एक बालक को सामने लाकर कहा:

“मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि तुम मन न फेरो और बच्चों के समान
न बनो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकोगे। इसलिए जो कोई अपने आप को इस बालक के समान नम्र बनाएगा वही स्वर्ग के राज्य में सबसे बड़ा होगा।”
— मत्ती 18:3–4 (ERV-HI)

यह दिखाता है कि परमेश्वर की दृष्टि में महानता नम्रता और पूर्ण भरोसे में है — जैसे एक बच्चा अपने माता-पिता पर निर्भर करता है।

यीशु स्वयं नम्रता का सर्वोच्च उदाहरण हैं:

स्वर्ग के राज्य में कौन महान है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

“उन्होंने अपने आप को दीन किया और मृत्यु — यहाँ तक कि क्रूस की मृत्यु तक — आज्ञाकारी बने। इस कारण परमेश्वर ने
भी उन्हें अत्यन्त महान किया और उन्हें वह नाम दिया जो हर
नाम से श्रेष्ठ है।”
— फिलिप्पियों 2:8–9 (ERV-HI)

परमेश्वर दीनों को ऊँचा उठाता है (याकूब 4:6; 1 पतरस 5:6)।

सेवा से महानता

यीशु ने सिखाया कि जो महान बनना चाहता है, वह दूसरों का सेवक बने:

“तुम में जो कोई बड़ा बनना चाहता है, वह तुम्हारा सेवक बने; और जो कोई तुम में प्रधान बनना चाहता है, वह सब का दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र भी सेवा कराने नहीं, पर सेवा करने और बहुतों के लिए अपने प्राण देने आया।”
— मरकुस 10:43–45 (ERV-HI)

मसीही नेतृत्व वास्तव में सेवकाई नेतृत्व है।

स्वर्ग के राज्य में कौन महान है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

और यीशु ने एक और चौंकाने वाला बयान किया:

“मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि जो स्त्री से जन्मे हैं, उनमें यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से बड़ा कोई नहीं हुआ, फिर भी जो स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा है वह उससे बड़ा है।”
— मत्ती 11:11 (ERV-HI)

इसका तात्पर्य यह है कि स्वर्ग के राज्य की महानता, विश्वास और विनम्रता से चिह्नित होती है — और यह संसार की मान्यताओं से बिल्कुल भिन्न है।

आगामी राज्य और पुरस्कार

जब प्रभु यीशु महिमा में लौटेंगे, वे राजा के रूप में राज्य करेंगे। जो लोग विजय पाएँगे और अंत तक उनके कार्यों में बने रहेंगे, उन्हें अधिकार मिलेगा:

“जो कोई विजय पाए और मेरे कामों को अंत तक बनाए रखे, मैं उसे राष्ट्रों पर अधिकार दूँगा। वह उन्हें लोहे की छड़ी से हाँकेगा।”

स्वर्ग के राज्य में कौन महान है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

— प्रकाशितवाक्य 2:26–27 (ERV-HI)

यह वही अधिकार है जो यीशु को पिता ने दिया (भजन संहिता 2:8–9)। और जब यीशु लौटेंगे:

“उसकी आँखें अग्निशिखा के समान थीं, और उसके सिर पर बहुत से मुकुट थे…”
— प्रकाशितवाक्य 19:12 (ERV-HI)

जो प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहते हैं, उन्हें इनाम दिया जाएगा:

“उसके स्वामी ने उससे कहा, ‘शाबाश, अच्छे और विश्वासयोग्य सेवक! तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत बातों का अधिकारी बनाऊँगा; अपने स्वामी के आनन्द में प्रवेश कर।’” — मत्ती 25:21 (ERV-HI)

पौलुस लिखता है:

स्वर्ग के राज्य में कौन महान है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

“अब मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे उस दिन
प्रभु, जो धर्मी न्यायी है, मुझे देगा; और न केवल मुझे, परंतु
उन सब को भी जो उसके प्रकट होने को प्रेम करते हैं।”
— 2 तीमुथियुस 4:8 (ERV-HI)

और यह भी स्पष्ट है कि स्वर्ग में प्रतिफल विश्वास और कार्यों के अनुसार भिन्न होंगे:

“यदि कोई इस नींव पर सोना, चाँदी, कीमती पत्थर, लकड़ी, घास या
फूस बनाए, तो हर एक का काम प्रकट होगा… यदि किसी का काम जो
उसने बनाया है, टिक जाए, तो उसे इनाम मिलेगा।”
— 1 कुरिन्थियों 3:12–14 (ERV-HI)

निष्कर्ष: स्वर्ग में महान बनने की बुलाहट

परमेश्वर हमें केवल उद्धार के लिए नहीं, बल्कि महान बनने के लिए बुलाता है — नम्रता, सेवा, और आत्मिक भंडारण के माध्यम से।

स्वर्ग के राज्य में कौन महान है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 9

“जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, उन्हें मैं ताड़ना देता हूँ और सुधारता हूँ। इसलिए उत्साही बनो और मन फिराओ। देखो, मैं द्वार पर खड़ा होकर खटखटा रहा हूँ; यदि कोई मेरी आवाज़ सुनकर द्वार खोले, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा
और वह मेरे साथ। जो विजय पाएगा, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठने दूँगा, जैसे मैं भी विजय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया।”
— प्रकाशितवाक्य 3:19–21 (ERV-HI)

समाप्ति

हमें इस संसार की महिमा नहीं, बल्कि स्वर्ग की सच्ची महिमा की खोज करनी चाहिए:

स्वर्गीय धन — परमेश्वर की सेवा और भक्ति से।

महानता — नम्रता और समर्पण से।

प्रतिफल — विश्वासयोग्यता और आत्मिक स्थायित्व के अनुसार।

स्वर्ग के राज्य में कौन महान है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 10

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp